

---

# Shri Rajarajeshvari Stuti or Rajarajeshvaryashtakam

श्रीराजराजेश्वर्याः स्तुतिः अथवा राजराजेश्वर्यष्टकम्

## Document Information

---

Text title : Shri Rajarajeshvari Stuti or Rajarajeshvaryashtakam

File name : rAjarAjeshvaryaShTakam.itx

Category : devii, dashamahAvidya, aShTaka

Location : doc\_devii

Author : rAjAnaka vidyAdhara

Transliterated by : Girdhari Lal koul glkoul.18 at gmail.com

Proofread by : Girdhari Lal koul glkoul.18 at gmail.com

Latest update : November 30, 2019

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

November 30, 2019

*sanskritdocuments.org*

---

---

# Shri Rajarajeshvari Stuti or Rajarajeshvaryashtakam

---

श्रीराजराजेश्वर्याः स्तुतिः अथवा राजराजेश्वर्यष्टकम्

---



ॐ नमः पराशक्तये ।

आदिक्षान्त समस्तवर्णविभवा यामातृकाऽपिणी  
मन्त्रवीर्यं परामृतरसा स्वाद्यात्सुषुप्तायिनी ।  
भावप्रात समुद्रगर्भलडरी शब्दार्थतत्त्वव्यापिनी  
सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ १ ॥

वाय्य वायक सारपूर्णा विभवा देवी षडध्वाश्रया  
श्रीचक्रान्तरवह्निदोषा निलयाया भिन्दुमात्रात्मिका ।  
सूक्ष्मात्सूक्ष्मतरा परामृतमयी नित्यं जगत्तर्पिनी  
सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ २ ॥

पूर्णाडन्तवमर्श पावनकरी नित्यं मलक्षालिनी  
भक्तानां भवभीति भञ्जनकरी हृत्पङ्कजे संस्थिता ।  
भाड्याभ्यन्तरयारिणी सुरसतो ऽसेनया सेविता  
सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ३ ॥

उर्ध्वाधः स्थितनाडिवृन्दविभवे सञ्जुविकामध्यमा  
स्वात्माभर्शन तत्परैश्च सततं भक्तैः षलु प्राप्यते ।  
मूलाद् भ्रष्टमभिलाषितडिदिवया भ्रष्टमनाडी स्मृता  
सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ४ ॥

वर्णावर्णनिवर्ण भेद निवडातत्राप्यभेदात्मिका  
वेदान्तागमतन्त्र सार मडिमाषड्दर्शनोऽल्लड्धिनी ।  
सर्वाचार विचार पालन परायानिर्गता चारका  
सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ५ ॥

ॐ तत्सदितिनामभिर्निगदिता सर्वागमे योगिभिः  
तन्प्राणान्त विचार्यभक्त निभडैः ड्रीतमिव शष्पवत् ।  
अैन्द्रं-धाम विडाय क्षीणकलुषैर्मोक्षाय या स्वीकृता

सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ६ ॥

सौरं ज्योतिरिदमपि परिमितं लीतं तथा यत्पदात्

ॐ ष्येतद्विमर्शनेन सततं सर्वमिदं स्वात्मनि ।

रक्तेस्तत्पदं प्रेषुभिञ्च मुनिभिः स्वस्थैः सदास्वीकृतं

सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ७ ॥

तैस्तेर्योगिवरैः सदा कवियशोनकं दिनं यत्पद-

ध्यानावस्थितं तद् गतेन मनसा प्राप्तं मङ्गलं निर्मलम् ।

भोक्षं भोगं ददाति या प्रभुद्विता विधाधरैर्वन्दिता

सा मां पातु सरस्वती भगवती श्रीराजराजेश्वरी ॥ ८ ॥


इति श्रीराजराजेश्वर्याः स्तुतिः राजानक विधाधर विरचिता शुभायास्तु ।

इति शिवम् ।


Encoded and proofread by Girdhari Lal koul glkoul.18 at gmail.com

Send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

---

——  
*Shri Rajarajeshvari Stuti or Rajarajeshvaryashtakam*

pdf was typeset on November 30, 2019

——  
Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

